



The DLF Emporio mall in Delhi.

PRIYANKA PARASHAR/MINT

## A Michelin-like guide for luxury

Luxortium, a new consortium of brands, aims to develop a luxury ecosystem in the country

Pradip Kumar Saha  
pradip.s@livemint.com

India is one of the fastest growing luxury markets in the world. But it is still in a nascent stage. According to a February report by industry lobby Assocham, the Indian luxury market is set to grow from \$23.8 billion (around ₹1.6 trillion) last year by 26% to \$30 billion by the year-end, on the back of "growing exposure of international brands amongst Indian youth and higher purchasing power of the upper class in tier II and III cities".

Market research company Euromonitor International in a report in February, "Luxury Goods In India", said that demand is expected to remain strong in India as the luxury goods industry continues to evolve.

But while the luxury industry is growing, there isn't one underlying thread that binds all the stakeholders together. "That is the platform we want to create with Luxortium," says Swapan Seth (formerly CEO of advertising agency Equus), founder of the by-invitation-only consortium of select top management and leading marketers of luxury goods and services. "We want to develop a luxury ecosystem in the country, where brands can cooperate to operate even while they compete with each other."

There is a need for continued dialogue between luxury brands because they feed off each other. That is what Luxortium aims to provide through "CEO's Only Breakfasts" and "Executive Roundtables" kind of events. "At the end of the day, an American Express is as important for DLF as DLF is for American Express. It is a symbiotic relationship," says Seth, who has tied up with brands like American Express, Reliance brands, DLF and BrandsWeLove.

"Cross-brand collaboration is the new buzzword and a defining feature for cultural aggregation and value creation," says Deepa Misra Harris, founder, BrandsWeLove. Aparajita Jain, director at Delhi-based art gallery Nature Morte, says the platform is not just about luxury products. "It is about understanding consumer behaviour. I think a platform like this is needed to start a conversation to help us understand customers better," says Jain, another partner at Luxortium.

India has a rich history as a market for luxury products. In the early decades of the 20th century, the country accounted for nearly 20% of Rolls-Royce's global sales. The Patiala Necklace, commissioned by Maharaja Bhupinder Singh in 1926, remains Cartier's largest single commission till date. And it seems that after a prolonged period of sluggish growth, following the economic crisis of 2008, brands are taking notice of India. In May, Florence-based watchmaker Officine Panerai opened its second Indian boutique in Delhi. In the same month, Montblanc opened two boutiques in Chennai. In April, French shoemaker Berluti also marked its debut in India. In such an environment, it becomes important to have an agency that can set benchmarks, represent the interest of all stakeholders and influence decision making.

"Why do people go by Michelin star ratings? Because that is a form of approval," says Seth. "And currently in India there is no rating company for luxury. That is what Luxortium will become. An independent luxury rating agency of sorts."

Luxortium, which will launch later this month, is starting as a business-to-business platform, but Seth says it will add consumer-centric features over time.

"We have the potential to be the centre of affluence for the Asia-Pacific region,"

● The first quarter GDP numbers augur very well for the entire fiscal 2018-19. While it is early days, the Indian economy seems back to a solid trajectory.



— SANDEEP JAJODIA, ASSOCHAM PRESIDENT

# जून तिमाही में 8.2% ग्रोथ ज्यादा रोजगार वाले सेक्टरों की विकास दर ज्यादा तेज

## विशेषज्ञों के अनुसार मैन्युफैक्चरिंग और कंस्ट्रक्शन में आगे भी अच्छी ग्रोथ रहेगी, खराब मानसून के कारण कृषि में होगी द्विक्रम

भारत-न्यूज | नई दिल्ली

सरकार ने राजस्व को अप्रैल-जून 2018 तिमाही के जोड़ोपै आंकड़े जारी किए। इसमें सबसे अच्छी वृद्धि यह है कि मैन्युफैक्चरिंग, कंस्ट्रक्शन और ग्रोथ जैसे सबसे ज्यादा रोजगार वाले सेक्टर में ग्रोथ सबसे ज्यादा रही है। पिछले महीने मैन्युफैक्चरिंग 13.5% की दर से आगे बढ़ा। इंडिया ब्रांड सर्वेच्यो फाउंडेशन के अनुसार जोड़ोपै में मैन्युफैक्चरिंग की 16% और नौकरीयां में 12% वृद्धि रही है। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि मैन्युफैक्चरिंग और कंस्ट्रक्शन में आगे भी अच्छी ग्रोथ देखने की मिलेगी। उनका कहना है कि आने वाले दिनों में हार्डवेयर और स्ट्रक्चर पर सरकारी निवेश आगे बढ़ेगा। लेकिन कृषि में बढ़ता का पूरा इस्तेमाल न होने और राजनीतिक अनिश्चितता के कारण निजी निवेश में ज्यादा देरी नहीं आयेगी।

सबसे ज्यादा रोजगार ग्रोथ और इससे संबंध क्षेत्रों में होता है। स्टैटिस्टिका के मुताबिक देश के कुल रोजगार में 42.74% हिस्सा कृषि क्षेत्र का ही है। इसकी ग्रोथ दर 3% से बढ़कर 5.3% हो गई। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि आगे यह सेक्टर परेशानी भरा कर सकता है। शुरू में मानसून सामान्य रहने का अनुमान था। लेकिन बारिश के सीजन के तीन महीने बीतने के बाद देश के 50% इलाके सूखे या बारिश की कमी में हैं। सोर्ससों के मुताबिक जुलाई-सितंबर तिमाही के आंकड़े 30 नवंबर को जारी होंगे।

### 10.65 लाख करोड़ रुपए का पूंजी निवेश प्राप्त किब्स कैपिटल परफॉरमन्स से इकोनॉमी में निवेश का पता चलता है। पिछले तिमाही में 10.65 लाख करोड़ रुपए का पूंजी निवेश हुआ। यह पिछले साल की समाप्त तिमाही के 9.68 लाख करोड़ से 10% ज्यादा है। शरीर में खराब लगावत बढ़ रही है। अच्छे मानसून के आगमन के बाद मांगीप इलाकों से भी मांग बढ़ने की उम्मीद थी। इसलिए निजी क्षेत्र की कंपनियों ने निवेश बढ़ाया। निजी निवेश की ग्रोथ अप्रैल-जून 2017 के 6.9% से बढ़कर 8.5% हो गई है। हालांकि सरकारी खर्च की रकम कम हुई है। पिछले साल इसकी ग्रोथ 17.6% थी, जो घटकर 7.5% रह गई।

सर्वोच्च विकास कैपिटल परफॉरमन्स से इकोनॉमी में निवेश का पता चलता है। पिछले तिमाही में 10.65 लाख करोड़ रुपए का पूंजी निवेश हुआ। यह पिछले साल की समाप्त तिमाही के 9.68 लाख करोड़ से 10% ज्यादा है। शरीर में खराब लगावत बढ़ रही है। अच्छे मानसून के आगमन के बाद मांगीप इलाकों से भी मांग बढ़ने की उम्मीद थी। इसलिए निजी क्षेत्र की कंपनियों ने निवेश बढ़ाया। निजी निवेश की ग्रोथ अप्रैल-जून 2017 के 6.9% से बढ़कर 8.5% हो गई है। हालांकि सरकारी खर्च की रकम कम हुई है। पिछले साल इसकी ग्रोथ 17.6% थी, जो घटकर 7.5% रह गई।



**4 माह में सरकारी खर्च का 86.5% पहुंचा**

2.92 लाख करोड़ अर टैक्स से यह पूरे साल का 18.8% है।

43,125 करोड़ रकम बैंक-देखें बैंक, पूरे साल का 17.8%

**कार सेक्टर की रफ्तार घटकर 6.6% पर आई**

नई दिल्ली | कोरला, रिफाइनरी और फाउंडेशन के अच्छे प्रदर्शन से जुलाई में आठ कार सेक्टर में उत्पादन 6.6% बढ़ा है। जून में यह 7.6% बढ़ा था। अप्रैल से जुलाई के चार महीने में ग्रोथ 2.6% की तुलना में 5.8% टन हुई है। उनका में 1.3% जोड़ रहा। हालांकि कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस में फिजल है। रूढ़ उत्पादन 5.4% और प्राकृतिक गैस 5.2% घट गया है।

सेक्टर	ग्रोथ
रिफाइनरी	12.3%
कोरला	10.8%
जोड़ोपै	9.7%
स्टील	10.8%
बिजनेस	4.8%

**इंडस्ट्री | इकोनॉमी की रफ्तार उम्मीद से ज्यादा**

वर्षा के कारण विकास की प्रॉस्पेक्ट रोजगार के अनुमान से कम है। इंडस्ट्री के संकेत मिल रहे हैं। मैन्युफैक्चरिंग में तेजी का एक कारणा बस इंडेक्स है। लेकिन इससे इकोनॉमी की रिशा का भी पूरा चलता है। पीएचडी सेक्टर के प्रॉस्पेक्ट वहीन वहीन के अनुसार कृषि में 5.3% विकास से पता चलता है कि मांगीप क्षेत्र पर फोकस का अभाव रह रहा है। एसीआर के प्रॉस्पेक्ट जांचा जाया है कि, सरकारी अच्छी बात यह है कि रोजगार देने वाले मैन्युफैक्चरिंग और कंस्ट्रक्शन में ग्रोथ सबसे ज्यादा है।

**वैतन आयोग की सिफारिशों और एचआरए बढ़ने से कंप्यूटर की डिमांड में वृद्धि होगी**

जीडीपी आंकड़े एशियन गेम्स में मेडल मिलने की तरह - महिंद्रा

वर्षा के कारण विकास की प्रॉस्पेक्ट रोजगार के अनुमान से कम है। इंडस्ट्री के संकेत मिल रहे हैं। मैन्युफैक्चरिंग में तेजी का एक कारणा बस इंडेक्स है। लेकिन इससे इकोनॉमी की रिशा का भी पूरा चलता है। पीएचडी सेक्टर के प्रॉस्पेक्ट वहीन वहीन के अनुसार कृषि में 5.3% विकास से पता चलता है कि मांगीप क्षेत्र पर फोकस का अभाव रह रहा है। एसीआर के प्रॉस्पेक्ट जांचा जाया है कि, सरकारी अच्छी बात यह है कि रोजगार देने वाले मैन्युफैक्चरिंग और कंस्ट्रक्शन में ग्रोथ सबसे ज्यादा है।